(3.) मनोसामाजिक पर्यावरण एवं शिक्षक की भूमिका

मनोसामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सामाजिक परम्पराये, एवम् सांस्कृतिक कार्यक्रम को सम्मिलित किया जाता है। मनोसामाजिक पर्यावरण के विषय स्वाभाविक रूप से छात्रों की रोचकता से सम्बन्धित होते है फिर भी जिन परम्पराओं का विकास शिक्षक छात्रों में करना चाहते है उसके लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का संचालन करके शिक्षक छात्रों में सामाजिक पर्यावरण के प्रति रोचकता उत्पन्न कर सकता है। शिक्षक द्वारा छात्रों में सामाजिक पर्यावरण के प्रति अवधारणा विकसित करने के लिए निम्न उपाय करने चाहिए -

1. छात्रों को विभिन्न प्रकार के त्यौहारों के बारे में बताना चाहिए तथा उनकी व्याख्या पर्यावरणीय सन्दर्भ में करनी चाहिए जैसे दिवाली के त्यौहार पर परिवेश स्वच्छता का अभियान चलाकर साफ-सफाई करायी जानी चाहिए तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने घर पर सफेदी, रंगाई-पुताई अवश्य करता है।
2. विभिन्न प्रकार की सामाजिक परम्पराओं के प्रति छात्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना चाहिए। विधवा विवाह दहेज प्रथा का विरोध, सामाजिक मूल्यों का विकास करने वाले नाटकों का मंचन करना चाहिए तथा छात्रों की उसमे सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए।
3. समाज में प्रचलित विभिन्न प्रकार के गीतों को पर्यावरण के प्रति सकारात्मक भाव रखते है, छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने चाहिए।
4. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए जिससे छात्रों में संस्कृति के तत्वों का ज्ञान उत्पन्न हो तथा वैश्विक पर्यावरणीय संस्कृति के सन्दर्भ में छात्र अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकें।
5. छात्रों को विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय कार्य सामूहिक रूप से सम्पन्न करने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे छात्रों में प्रेम, सहयोग एवं अन्य सामाजिक गुणों का विकास सम्भव हो सके।

इस प्रकार छात्रों के पर्यावरणीय अवधारणा के विकास के लिए शिक्षकों द्वारा प्रयास करना चाहिए। शिक्षक छात्रों के प्रति सकारात्मक व्यवहार कर छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता ला सकता है।

Scanned with CamScanner